11119CH12

द्वादश अध्याय

शास्त्रीय साहित्य

वाङ्मय दो प्रकार का होता है— शास्त्र एवं काव्य। काव्य का विवेचन पूर्व अध्यायों में हो चुका है। अब शास्त्र का विवेचन किया जा रहा है। वैदिक वाङ्मय को यथार्थ रूप में समझने के लिए अत्यन्त प्राचीनकाल में ही व्याकरण, ज्योतिष, गणित जैसे शास्त्रों का विकास हुआ। सामान्यतया ऐसे साहित्य को शास्त्र कहते हैं, जो ज्ञान अथवा विज्ञान के तथ्यों का विवेचन करता है और उसे 'स्वीकार न करना समुचित नहीं माना जाता है। उदाहरणार्थ व्याकरण के नियमों का काव्य रचना में ध्यान न रखने को समुचित नहीं माना जाता है। व्याकरण के नियमों को न मानने पर वैसा किया हुआ प्रयोग सही नहीं माना जाता है। इसी प्रकार वैदिक साहित्य में प्रस्फुटित विभिन्न विचारों से धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, काव्य शास्त्र, वास्तुशास्त्र इत्यादि अनेक शास्त्र विकसित हुए। ये शास्त्र विभिन्न युगों में अपने समय की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विभागों में बँट गए और इन शास्त्रों से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ लिखे गए तथा इन पर टीकाएँ भी लिखी गईं। टीकाओं में मूलग्रन्थों के भावों को समझने के अतिरिक्त नए तथ्य भी आए। कुछ टीकाएँ संक्षिप्त थीं, तो कुछ बहुत विस्तृत भाष्यों के रूप में थीं। इसी प्रकार विभिन्न शास्त्रों में ग्रन्थों की संख्या बढ़ गई। किसी भी एक शास्त्र के सभी ग्रन्थों को पढ़ पाना भी किसी व्यक्ति के लिए सरल नहीं है। इसी से शास्त्रीय साहित्य की विशालता समझी जा सकती है।

शास्त्रीय साहित्य का विकास वस्तुत: वैदिक युग से ही आरंभ होता है। वैदिक मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करके उन्हें सही अर्थों में समझने के लिए तीन विभिन्न शास्त्रों का जन्म हुआ— शिक्षा, व्याकरण तथा निरुक्त। वैदिक काल में ये तीनों शास्त्र पृथक्-पृथक् प्रचलित थे, किन्तु लौकिक संस्कृत के काल में ये तीनों व्याकरण में ही समाविष्ट हो गए। इससे व्याकरण शास्त्र का क्षेत्र बढ़ गया।

वैदिक यज्ञों में वेदिका तथा यज्ञशाला के निर्माण के क्रम में गणित तथा भवन-विज्ञान (वास्तुशास्त्र) का उद्भव हुआ। *अथर्ववेद* में चिकित्सा से सम्बद्ध बहुत से संकेत मिलते हैं। परवर्ती युग में उनका विकास आयुर्वेद के रूप में हुआ।

© NCERT not to be republished

वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर जनसामान्य के सामाजिक और धर्म-संबंधी विचार व्यक्त किए गए थे। उनका संकलन करके धर्मशास्त्र बनाया गया। *ऋग्वेद* और *अथर्ववेद* में जो दार्शनिक चिन्तन पाए जाते हैं, उनका विकास उपनिषदों में हुआ और यही चिन्तन आगे चलकर दर्शनशास्त्र के रूप में उभरा। दर्शनशास्त्र, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त— इन छः आस्तिक तथा चार्वाक, जैन एवं बौद्ध— इन तीन नास्तिक दर्शनों के रूप में विकसित हुआ।

वेदों में नर-नारी के प्रेम को कई रूपों में निर्दिष्ट किया गया है। इन विचारों से कामशास्त्र का विकास हुआ। काव्य में अलंकारों के प्रयोगों का विवेचन करने के लिए काव्यशास्त्र का आविर्भाव हुआ। राजनीति का विवेचन यद्यपि पहले धर्म-शास्त्र के अंग के रूप में होता था, किंतु बाद में यह अर्थशास्त्र के नाम से पृथक् शास्त्र बन गया। इस प्रकार संस्कृत भाषा में अनेक शास्त्र विकसित हुए।

आरम्भिक अवस्था में ये शास्त्र इधर-उधर बिखरे हुए थे, किन्तु कालक्रम में इन्हें ग्रन्थों के रूप में व्यवस्थित किया गया। शास्त्रों के अध्ययन की समृद्ध परम्परा भारतवर्ष में रही है। यही हमारा प्राचीन विज्ञान है, दर्शन है और भारतीय मेधा का उत्कर्ष है। अपने शास्त्रीय साहित्य पर आज भी संस्कृत वाङ्मय को गर्व है।

प्रमुख शास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय

1. **शब्दकोश विज्ञान**— वैदिक युग से ही शब्दकोश-निर्माण की पद्धति चलती आ रही है। वैदिक शब्दों के संग्रह को *निघण्टु* कहा जाता है। समय-समय पर विविध कोशों की रचना भारत में होती रही है। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध *नामलिङ्गानुशासन* है, जो कोशकार अमरसिंह के नाम पर *अमरकोश* के नाम से अधिक विख्यात है। इसकी रचना प्रायः तीसरी शताब्दी ई. में हुई थी। इस ग्रन्थ में तीन काण्ड हैं, जिनमें वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण करके पर्यायवाची शब्दों का श्लोकबद्ध संग्रह किया गया है। यद्यपि बाद में भी हलायुध की *अभिधानरत्नमाला,* यादव प्रकाश का *वैजयन्तीकोश,* महेश्वर का *विश्वप्रकाश,* हेमचन्द्र की *अभिधानचिन्तामणि* आदि कोश ग्रन्थ लिखे गए, किन्तु *अमरकोश* का महत्त्व आज भी अक्षुण्ण है। इस पर प्रायः 40 टीकाएँ लिखी गईं।

आधुनिक काल में वर्णमाला के क्रम से शब्दों को सजाकर दो महान् कोश लिखे गए, जिनमें ताराचंदवागीश (छः भागों में) तर्कवाचस्पति के द्वारा संकलित *वाचस्पत्यम्*

Reprint 2025-26

तथा राधाकान्तदेव द्वारा पाँच भागों में प्रस्तुत कराया गया *शब्दकल्पद्रुम* विशेष उल्लेखनीय है।

2. **छन्द:शास्त्र**— इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ पिङ्गलाचार्य के द्वारा लिखित छन्द:सूत्र है। इसमें वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के नियम सूत्र रूप में लिए गए हैं। क्षेमेन्द्र ने *सुवृत्ततिलक* नामक लघु पुस्तक में छन्दों के पद्यबद्ध लक्षण दिए हैं, जो उदाहरण का काम भी करते हैं। इन्होंने संस्कृत के विभिन्न कवियों के द्वारा प्रयुक्त कई छंदों की प्रशंसा भी की है। केदारभट्ट (पन्द्रहवीं शताब्दी ई.) का *वृत्तरत्नाकर* तथा गंङ्गादास कृत *छन्दोमञ्जरी* छन्द:शास्त्र के अन्य सुप्रचलित ग्रन्थ हैं।

3. **व्याकरणशास्त्र**— वैदिक साहित्य में शब्दों के उच्चारण, प्रकृति-प्रत्यय के रूप में शब्दों का विभाजन, वचन, काल आदि के विषय में कई स्थलों पर विवेचन है। इससे व्याकरणशास्त्र का विकास हुआ। यद्यपि शाकटायन, शौनक, शाकल्य, स्फोटायन इत्यादि कई प्राचीन व्याकरण शास्त्री हुए, किन्तु आज सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रन्थ पाणिनि की *अष्टाध्यायी* ही है। आठ अध्यायों में पाणिनि ने लौकिक संस्कृत और वैदिक संस्कृत से सम्बद्ध प्राय: 4,000 सूत्र लिखे हैं। इस ग्रंथ में दोनों भाषाओं का सर्वाङ्ग विवरण दिया गया है। पाणिनि के सूत्र अत्यन्त संक्षिप्त हैं, किन्तु व्यापक रूप से संस्कृत भाषा के नियमों को प्रस्तुत करते हैं। पाणिनि का समय प्राय: 500 ई. पू. माना जाता है। इन सूत्रों पर संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में वार्तिक लिखने वाले कात्यायन (350 ई. पू.) हुए, जिन्होंने कहीं-कहीं सूत्रों में दिए गए नियमों को आगे बढ़ाया और कहीं उनमें संशोधन का सुझाव दिया। इसके बाद पतञ्जलि (150 ई. पू.) हुए, जिन्होंने पाणिनि के सूत्र और कात्यायन के वार्तिक दोनों पर संयुक्त रूप से *महाभाष्य* नामक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा। इन तीनों आचार्यों को समुदित रूप से व्याकरणशास्त्र में त्रिमुनि अथवा मुनित्रय कहा जाता है।

अष्टाध्यायी तथा *महाभाष्य* पर अनेक व्याख्याएँ लिखी गईं, इनमें वामन और जयादित्य की *काशिकावृत्ति* अष्टाध्यायी की श्रेष्ठ व्याख्या के रूप में प्रसिद्ध है। कुछ समय के बाद पाणिनि के सूत्रों को सरलता की दृष्टि से नए रूप में व्यवस्थित करके प्रक्रियाग्रन्थ लिखे गए, जिनमें रामचन्द्र (1400 ई.) की *प्रक्रियाकौमुदी* और भट्टोजिदीक्षित (1600 ई.) की *सिद्धान्तकौमुदी* प्रसिद्ध हैं। पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश के लिए वरदराज कृत *लघुसिद्धान्तकौमुदी* जैसे सरल ग्रन्थ भी लिखे गए। *सिद्धान्तकौमुदी* पर टीकाओं का प्राचुर्य है, जिनका अध्ययन नव्य व्याकरण के अन्तर्गत होता है।

Reprint 2025-26

पाणिनीय व्याकरण के अन्तर्गत कुछ दार्शनिक ग्रन्थ भी लिखे गए जिनमें भाषा के अर्थ-पक्ष या दर्शन पर विचार किया गया। इन ग्रन्थों में भर्तृहरि (500 ई.) का *वाक्यपदीय,* कौण्डभट्ट (1650 ई.) का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट (1700 ई.) की *वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा* प्रसिद्ध हैं।

पाणिनि के अतिरिक्त अन्य वैयाकरणों ने भी विभिन्न व्याकरण-सम्प्रदायों को प्रवर्तित किया। इनमें कातन्त्र, चान्द्र, शाकटायन, हैम, सारस्वत तथा सौपद्म सम्प्रदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। प्राचीन वैयाकरणों के विषय में यह श्लोक प्रचलित है—

इन्द्रश्चन्द्र: काशकृत्स्नापिशली शाकटायन:।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिका:।।

4. **धर्मशास्त्र**— आचार-व्यवहार की शिक्षा के लिए वैदिक धर्म-सूत्रों पर आश्रित अनेक स्मृतियाँ लिखी गईं। इनमें वर्णाश्रम व्यवस्था, राजा के कर्त्तव्य, विवाद का निर्णय आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। यह सामान्य धारणा है कि स्मृतियाँ श्रुतियों अर्थात् वेदों का अनुसरण करती हैं। इन स्मृतियों के आधार पर ही हिन्दुओं के दीवानी और फौजदारी कानून बने हुए हैं। यद्यपि प्राचीन स्मृतियों के बहुत से नियम आज अपना अर्थ और महत्त्व खो चुके हैं, तथापि आज भी भारतीय सामाजिक व्यवस्था मूलत: स्मृतियों पर आश्रित है। इसलिए स्मृतियों के अध्ययन की अपनी उपयोगिता है।

स्मृति-ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्व *मनुस्मृति* का है। इसमें 12 अध्याय हैं, जिनमें सभी स्मृतियों की अपेक्षा अधिक व्यापक विषयवस्तु का प्रतिपादन श्लोकों में है। सृष्टि से आरंभ करके मानव समाज के विकास तथा दैनिक जीवन के कर्त्तव्यों का विवेचन करते हुए मोक्ष तक का इसमें विवेचन है। मनु को सभी मानवों का पिता कहा गया है। उन्होंने जीवन की व्यवस्था के लिए अपने नियम दिए हैं।

याज्ञवल्क्यस्मृति (300 ई.) में अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील विचार दिए गए हैं। इसमें तीन अध्याय हैं— आचार, *व्यवहार* और *प्रायश्चित्त*। इस पर मिताक्षरा व्याख्या सुप्रसिद्ध है, जिसे हिन्दुओं के कुछ वर्गों में सर्वाधिक प्रमाणिक माना जाता है। *नारदस्मृति, विष्णुस्मृति* आदि अन्य कई स्मृतियाँ हैं। धर्मशास्त्र के अन्तर्गत स्मृतियों के अतिरिक्त निबन्ध-ग्रंथों की भी रचना हुई, जिनमें किसी धार्मिक व्यवस्था, अनुष्ठान, विवादग्रस्त विषय आदि का विवेचन हुआ। बारहवीं शताब्दी के बाद ऐसे अनेक निबन्ध लिखे गए। आधुनिक भारतीय कानूनों को अंग्रेजों ने इन निबन्धों के आधार पर ही बनाया था।

Reprint 2025-26

5. **राजनीतिशास्त्र**— प्राचीन भारत में राजनीति को भी बहुत महत्त्व दिया जाता था। कहते हैं कि सुव्यवस्थित राज्य में ही सभी शास्त्र पनपते हैं। इसलिए राज्य को सुदृढ़ करने के लिए राजनीतिशास्त्र से संबद्ध पर्याप्त चर्चा होती रही। *महाभारत* का शान्ति पर्व इस दृष्टि से बहुत महत्त्व का है। प्राचीन धर्मशास्त्री और स्मृतिकार भी राजनीति की विवेचना करते हैं, किन्तु राजनीतिविषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* है। इसमें 15 अधिकरण हैं, जिन्हें अध्यायों में विभक्त किया गया है। सम्पूर्ण *अर्थशास्त्र* सूत्रात्मक है। कहीं-कहीं श्लोकों में सूत्र की बातें दोहराई गई हैं।

अर्थशास्त्र में राजा की शिक्षा, मंत्रियों की नियुक्ति, गुप्तचरों की नियुक्ति, विभिन्न विभागीय अधीक्षकों के कर्त्तव्य, राज्य के दुष्ट नागरिकों का दमन, कृत्रिम मूल्य-वृद्धि, मिलावट तथा गलत नाप-तोल को रोकने के उपाय, राज्य के सात अंग, शान्ति और उद्योग, शत्रु पर आक्रमण, युद्ध, दुर्ग का घेरा, विष-प्रयोग आदि अनेक विषयों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है। कौटिल्य ने *अर्थशास्त्र* को कठोर अनुशासनबद्ध राजतन्त्र की दृष्टि से लिखा है। राजा आन्तरिक व्यवस्था रखे, प्रजा की रक्षा करे और युद्ध के लिए सदा तत्पर रहे। *अर्थशास्त्र* इस सिद्धान्त को मानता है कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधनों का अच्छा-बुरा होना महत्त्वपूर्ण नहीं है। *अर्थशास्त्र राजतरङ्गिणी* के समान ही संस्कृत वाङ्मय का गौरव ग्रन्थ है।

6. **नीतिशास्त्र**— राजनीति के समान सामान्य व्यावहारिक नीति पर भी संस्कृत भाषा में कई ग्रन्थ लिखे गए हैं। *कामन्दकीयनीतिसार* अर्थशास्त्र के प्रमुख विषयों को श्लोकों में प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार सोमदेवसूरि कृत *नीतिवाक्यामृत* भी *अर्थशास्त्र* पर आश्रित है। *चाणक्यनीतिदर्पण* नीतिश्लोकों का संग्रह है। भोज का *युक्तिकल्पतरु,* चण्डेश्वर का *नीतिरत्नाकर* और *शुक्रनीति* भी व्यावहारिक नीतिशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ हैं।

7. **चिकित्साशास्त्र**— इसे आयुर्वेद कहा जाता है। बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है कि राजगृह में जीवक नामक बहुत बड़ा वैद्य रहता था, जिसने बुद्ध की भी चिकित्सा की थी। संस्कृत भाषा में इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ *चरकसंहिता* है। इसमें आठ खण्ड और 30 अध्याय हैं। इसकी रचना प्राय: गद्य में है। इसमें शल्य-क्रिया को छोड़कर चिकित्सा के सभी विषयों का प्रतिपादन है। इसका समय प्रथम शताब्दी ई. माना जाता है। इस शास्त्र का दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ *सुश्रुत-संहिता* है, जिसमें शल्यक्रिया पर बहुत बल दिया गया है। इसमें शल्यक्रिया के उपकरणों का भी परिचय दिया गया

Reprint 2025-26

है। दोनों ग्रन्थ सातवीं-आठवीं शताब्दी में अरबी भाषा में रूपांतरित हो चुके थे।

वाग्भट के दो चिकित्सा–ग्रन्थ मिलते हैं— *अष्टांगसंग्रह* और *अष्टांगहृदयसंहिता*। विद्वानों का मत है कि इन दोनों की रचना वाग्भट नाम के दो व्यक्तियों ने की थी, जो एक ही वंश में हुए थे। नागार्जुनकृत *योगसार*, शार्ङ्गधर-रचित *शार्ङ्गधरसंहिता* (तेरहवीं शताब्दी), भावमिश्र-रचित *भावप्रकाश* इत्यादि इस शास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं।

8. ज्योतिष तथा गणित— इस क्षेत्र में भारतीयों की उपलब्धि वैदिक युग से ही मिलती है। नक्षत्रों की गणना, ग्रहों का विचार, काल-गणना आदि के क्षेत्र में भारतीय ज्योतिषियों की अद्भुत क्षमता थी। 476 ई. में उत्पन्न आर्यभट्ट ने 121 पद्यों में *आर्यभटीय* नामक ग्रंथ लिखा था। उन्होंने पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना सिद्ध किया था। उनके ग्रहण-विषयक सिद्धांत आज भी मान्य हैं। वराहमिहिर ने प्राय: 550 ई. में ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों पर *पञ्चसिद्धांतिका* नामक ग्रंथ लिखा था। सातवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त ने *ब्रह्मस्फुटसिद्धांत* की रचना की। भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) ने *सिद्धांत-शिरोमणि* नामक सिद्धांतग्रंथ के अतिरिक्त *लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित* तथा *गोलाध्याय* नामक गणित-ग्रंथ लिखे। गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त तथा श्रीधर का भी महान् योगदान है। आर्यभट्ट ने विश्व में पहली बार शून्य अंक एवं दशमलव का आविष्कार किया, जिससे गणित के क्षेत्र में एक नए युग का आरम्भ हुआ।

फलित ज्योतिष के क्षेत्र में वराहमिहिर की *बृहत्संहिता, बृहज्जातक* और *लघुजातक* नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। *विद्यामाधवीय* तथा *ज्योतिर्विदाभरण* नामक ग्रन्थों में फलित ज्योतिष का विवेचन है। कुछ ज्योतिषियों ने शकुनविद्या, भविष्यफल, स्वप्नविज्ञान तथा सामुद्रिक शास्त्र के विषय में भी विभिन्न ग्रंथ लिखे।

9. दर्शनशास्त्र— *ऋग्वेद* में कई दार्शनिक सूक्त हैं, जिनमें संसार के मूल तत्त्व और सृष्टि-प्रक्रिया का विवरण मिलता है। बाद में उपनिषदों में इन्हीं विषयों का रोचक विवेचन किया गया। आत्मा, ब्रह्म, जगत्, मृत्यु, जीवन आदि की व्याख्या रोचक उपाख्यानों के द्वारा इनमें की गई। वैदिक साहित्य के बाद दार्शनिक धारा दो भागों में विभक्त हो गई। पहली धारा वैदिक परंपरा को आगे बढ़ाने वाली थी, जिसे आस्तिक कहा गया। दूसरी धारा वैदिक परम्परा के विरोध में चली, जिसे नास्तिक कहा गया।

नास्तिक दर्शन के तीन रूप मिलते हैं— चार्वाक, जैन और बौद्ध। चार्वाक पूर्णत: भौतिकवादी दर्शन है, जिसमें ईश्वर, धर्म, आत्मा, परलोक आदि उन सभी विषयों का

Reprint 2025-26

खण्डन है जो प्रत्यक्ष नहीं है। चार्वाक दर्शन का प्रचार बहुत हुआ, जिससे इसका नाम लोकायत भी पड़ा। बृहस्पति इस दर्शन के प्रणेता माने जाते हैं। इनका कोई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नहीं मिलता। बौद्ध दर्शन महात्मा बुद्ध के द्वारा आरंभ हुआ। आरंभ में इसके ग्रन्थ पालि भाषा में लिखे गए, किंतु बाद में संस्कृत भाषा में बौद्ध दर्शन के ग्रन्थ लिखे गए। तिब्बत, चीन, जापान, श्रीलंका, थाइलैण्ड इत्यादि देशों में भी यह धर्म उन देशों की भाषाओं में विकसित हुआ। संस्कृत में महायान धर्म की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गईं। बौद्ध दर्शन की चार शाखाएँ हो गईं, जैसे- शून्यवाद, विज्ञानवाद, सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक। *सद्धर्मपुण्डरीक, ललितविस्तर, लंकावतारसूत्र, माध्यमिककारिका, अभिधर्मकोश* इत्यादि प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ हैं, जो संस्कृत में लिखे गए। जैन धर्म का विकास भी बौद्ध-धर्म के पूर्व ही हो चुका था। इसके अधिकांश ग्रन्थ प्राकृत में हैं, किन्तु बाद में संस्कृत में भी बहुत से जैन ग्रंथ लिखे गए। उमास्वामी या उमास्वाति (100 ई.) का *तत्त्वार्थाधिगमसूत्र* प्रथम संस्कृत रचना है जिसमें जैनों के सिद्धांतों का सर्वांगपूर्ण वर्णन है। जैनों ने संस्कृत भाषा में दर्शन, काव्य, व्याकरण तथा अन्य क्षेत्रों में भी रचनाएँ कीं।

आस्तिक दर्शन के छह रूप मिलते हैं— सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त। इनमें प्रत्येक दर्शन का विशाल साहित्य उपलब्ध है।

मीमांसा का आरंभ जैमिनि के *मीमांसासूत्र* (12 अध्याय) से होता है। इस पर शबरस्वामी ने भाष्य लिखा। इस भाष्य पर प्रभाकर ने *बृहती* टीका लिखी। दूसरी ओर कुमारिल ने इसकी व्याख्या तीन पृथक् पुस्तकों में की। इनमें *श्लोकवार्तिक* और *तन्त्रवार्तिक* प्रसिद्ध हैं। प्रभाकर और कुमारिल ने मीमांसा में दो पृथक् संप्रदाय चलाए, जिनमें कई विषयों पर मतभेद है। मीमांसा दर्शन मुख्यत: वैदिक वाक्यों पर आधारित धर्म की व्याख्या करता है। मीमांसा दर्शन के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए लौगाक्षि भास्कर का *अर्थसंग्रह* महत्त्वपूर्ण है। वैदिक ज्ञानकाण्ड पर आश्रित वेदान्त दर्शन वस्तुत: उपनिषदों का तत्त्वचिंतन है, जिसे बादरायण ने अपने *ब्रह्मसूत्र* में निबद्ध किया। इस सूत्र पर शंकराचार्य ने अपना भाष्य लिखा, जिससे अद्वैतवेदान्त का विकास हुआ। शांकरभाष्य पर कई टीकाएँ लिखी गईं, जिनमें वाचस्पति की *भामती* नामक टीका विशेष उल्लेखनीय है। सदानन्द (सत्रहवीं शताब्दी) का सदानन्द कृत *वेदान्तसार* वेदान्त शास्त्र में प्रवेश कराने वाला एक सरल ग्रंथ है। ब्रह्मसूत्र पर अनेक आचार्यों ने अपनी व्याख्याएँ लिखकर अपने-अपने संप्रदाय चलाए। रामानुज (1100 ई.) ने श्रीभाष्य के द्वारा विशिष्टाद्वैत संप्रदाय चलाया और विष्णु की भक्ति को प्रधानता दी। मध्वाचार्य ने द्वैत सिद्धांत और वल्लभाचार्य ने

Reprint 2025-26

शुद्धाद्वैत सिद्धांत का श्रीगणेश किया। वेदान्त के विभिन्न दार्शनिक विचारों को संकलित करके *योगवासिष्ठ* नामक ग्रंथ की रचना मनोहर काव्य शैली में की गई।

न्यायदर्शन का प्रवर्तन गौतम ने *न्यायसूत्र* लिखकर किया, जिसपर वात्स्यायन ने *भाष्य* लिखा। इस भाष्य पर उद्योतकर ने *न्यायवार्तिक* लिखा। इस वार्तिक पर वाचस्पति मिश्र ने *तात्पर्यटीका* लिखी। इस टीका की व्याख्या उदयनाचार्य ने *परिशुद्धि* के नाम से लिखी। वस्तुत: टीका पर टीका लिखने का यह क्रम बौद्ध न्यायदर्शन के विरुद्ध संघर्ष के कारण चला। न्यायशास्त्र के सिद्धांतों का खण्डन बौद्ध लोग अपने ग्रन्थों में करते थे। इसलिए उनके आक्षेपों से रक्षा के लिए न्यायशास्त्रियों ने टीकाएँ लिखीं। जयन्तभट्ट ने न्यायमञ्जरी में न्यायसिद्धांत के विरोधी सभी सिद्धांतों का खंडन किया। गंगेश उपाध्याय (तेरहवीं शताब्दी) ने तत्त्वचिन्तामणि लिखकर न्यायशास्त्र को एक नया रूप दिया, जिसे **नव्य न्याय** कहते हैं। इस ग्रंथ पर व्याख्याओं का विपुल साहित्य लिखा गया। नव्य न्याय से सभी शास्त्रों को सूक्ष्म अभिव्यक्ति में सहायता मिली।

वैशेषिक दर्शन का प्रवर्तन कणाद ने किया। न्याय और वैशेषिक मिलते-जुलते दर्शन हैं। कणाद के वैशेषिक सूत्र की व्याख्याएँ बाद में लिखी गई, किंतु इस दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य में *पदार्थधर्मसंग्रह* को अधिक महत्त्व मिला। इसकी व्याख्याओं के द्वारा इस दर्शन के सिद्धांत प्रचारित हुए। न्याय और वैशेषिक को मिलाकर कई ग्रंथ लिखे गए, जिसमें केशवमिश्र की *तर्कभाषा* और विश्वनाथ की *न्यायसिद्धान्तमुक्तावली* प्रमुख है। अन्नम्भट्ट का *तर्कसंग्रह* इन दर्शनों में प्रवेश के लिए सरलतम ग्रन्थ है।

सांख्यदर्शन का प्रवर्तन महर्षि कपिल ने किया था। इस पर तेरहवीं शताब्दी ई. में विज्ञानभिक्षु ने *सांख्यप्रवचनभाष्य* लिखा। ईश्वरकृष्ण (300 ई.) की *सांख्यकारिका* सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ है। इस पर वाचस्पति ने *तत्त्वकौमुदी* टीका लिखी थी। सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति का जो विवेचन किया गया है, उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए पतञ्जलि ने योगसूत्र लिखा। इस पर व्यास का भाष्य और कई अन्य व्याख्याएँ भी मिलती हैं।

विभिन्न दर्शनों के सिद्धांतों का संग्रह तथा विवेचन करने वाले ग्रंथ भी समय-समय पर लिखे जाते रहे। इनमें हरिभद्र (आठवीं शताब्दी) का *षड्दर्शन-समुच्चय* तथा माधवाचार्य (चौदहवीं शताब्दी) का *सर्वदर्शनसंग्रह* बहुत प्रसिद्ध हैं।

10. काव्यशास्त्र— काव्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र भी कहते हैं, इसमें काव्य, नाटकादि के लक्षण, गुण, दोष, रीति, अलंकार, रस, ध्वनि तथा

Reprint 2025-26

शब्दशक्ति पर विचार होता है। इस शास्त्र का विशाल साहित्य उपलब्ध है। इसमें शताधिक मौलिक ग्रंथ लिखे गए हैं, टीकाओं की तो बात ही अलग है।

इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ भरतमुनि निर्मित *नाट्यशास्त्र* है। यह ग्रन्थ मुख्यत: श्लोकबद्ध है। इसमें 36 अध्याय हैं। मूलत: यह नाट्य एवं रस का विचार करता है, किंतु श्रव्य-काव्य संबंधी बहुत-सी बातें भी इसमें मिलती हैं। उसकी रचना 100 ई. पू. से पहले हो चुकी थी।

भामह (छठी शताब्दी) का *काव्यालंकार* छ: परिच्छेदों में विभक्त है। पूरा ग्रंथ श्लोकबद्ध है। भामह अलंकारों पर बहुत बल देते हैं। दण्डी (छठी शताब्दी) ने तीन परिच्छेदों में *काव्यादर्श* नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें उन्होंने काव्य के भेदों की परिभाषाएँ देकर अलंकारों की विवेचना की है। पूरा ग्रन्थ पद्यात्मक है।

वामन (800 ई.) ने *काव्यालंकारसूत्र* नामक ग्रन्थ में रीति को काव्य की आत्मा माना है। यह पाँच अधिकरणों का सूत्रात्मक ग्रंथ है। इसमें दोष, गुण, अलंकार तथा कतिपय विवादास्पद कवि प्रयोगों का विवेचन है। आनन्दवर्धन (850 ई.) का *ध्वन्यालोक* काव्यशास्त्र के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी रचना है, जिसमें प्रतीयमान अर्थ को काव्य में महत्त्व दिया गया है, व्यंजना-शक्ति को पृथक् मान्यता दी गई है और ध्वनि को काव्य की आत्मा माना गया है। इस ग्रंथ में चार उद्योत हैं। पूरा ग्रन्थ कारिका और उसकी वृत्ति के रूप में है। कुन्तक ने *वक्रोक्तिजीवित* में वक्रोक्ति सिद्धांत का प्रतिपादन किया और वक्रोक्ति को काव्य का जीवन कहा गया है। इसमें चार उन्मेष हैं। राजशेखर की *काव्यमीमांसा* 18 अध्यायों का ग्रंथ है। इसमें काव्य के निर्माता के व्यक्तित्व के विकास की विवेचना हुई है। कवियों के लिए इसमें व्यावहारिक नियम दिए गए हैं। यह कवि शिक्षा का प्रथम ग्रन्थ है। महिमभट्ट का *व्यक्तिविवेक* आनन्दवर्धन की मान्यता की आलोचना करने के लिए लिखा गया था। धारानरेश भोज (1000 ई.) ने काव्यशास्त्र में *सरस्वतीकण्ठाभरण* तथा *शृंगारप्रकाश* नामक दीर्घकाय ग्रंथ लिखे। इसी काल में कश्मीर में अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र की टीका *अभिनवभारती* तथा ध्वन्यालोक पर लोचन टीका लिखी। मम्मट (बारहवीं शताब्दी) ने *काव्यप्रकाश* लिखकर ध्वनि-विरोधियों का खंडन करते हुए काव्य का सर्वांगपूर्ण विवेचन किया। इस ग्रन्थ पर सर्वाधिक टीकाएँ लिखी गईं, जिनसे काव्यप्रकाश के प्रभाव और लोकप्रियता का पता चलता है। विश्वनाथ (चौदहवीं शताब्दी ई.) का *साहित्यदर्पण* काव्यप्रकाश से भी अधिक व्यापक

Reprint 2025-26

रूप से काव्यशास्त्रीय विषयों का विवेचन करता है। इसमें नाट्य-शास्त्र को भी समाविष्ट किया गया है। जिस प्रकार काव्यप्रकाश में 10 उल्लास हैं, उसी प्रकार साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद हैं। दोनों ग्रंथ कारिका और वृत्ति के रूप में लिखे गए हैं। रूपगोस्वामी (पन्द्रहवीं शताब्दी) ने भक्ति रस को स्वतंत्र तथा महत्त्वपूर्ण रस सिद्ध करने के लिए दो विशाल ग्रन्थ लिखे— *भक्तिरसामृतसिन्धु* तथा *उज्ज्वलनीलमणि।* जगन्नाथ (सत्तरहवीं शताब्दी) का *रसगंगाधर* एक प्रौढ़ साहित्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। इसमें काव्य की नई परिभाषा देकर प्राचीन परिभाषाओं की आलोचना की गई है। इस ग्रन्थ में जगन्नाथ ने अपने ही उदाहरण दिए हैं। यह ग्रन्थ आननों में विभक्त है एवं अपूर्ण है।

11. **अन्य व्यावहारिक शास्त्र**— कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* का संबंध अन्य छोटे-छोटे शास्त्रों के साथ भी है। इनमें एक धनुर्वेद है जिसे उपवेद माना गया है। इस विषय का एक ग्रन्थ *कोदण्डमण्डन* मिलता है। शार्ङ्गधर की *वीरचिन्तामणि* में युद्ध-संबन्धी विषयों पर विचार किया गया है। इसी प्रकार गजशास्त्र और अश्वशास्त्र पर भी कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जैसे— *मातङ्गलीला, अश्वायुर्वेद, अश्ववैद्यक* इत्यादि। शिल्पशास्त्र अथवा वास्तुशास्त्र पर भी कुछ साहित्य मिलता है, जैसे— *मनुष्यालयचन्द्रिका* (सात अध्याय), *मयमत* (24 अध्याय), भोज कृत *समराङ्गण-सूत्रधार,* मण्डन-रचित *वास्तुमण्डन* तथा *प्रासादमण्डन*। इनमें भवन-निर्माण की कला का विवरण प्राप्त होता है। *मानसार* में मूर्तिकला का वर्णन है। रत्नविज्ञान पर भी कई ग्रन्थ मिलते हैं, जैसे— बुद्धभट्ट की *रत्नपरीक्षा*, नारायण पण्डित की *नवरत्नपरीक्षा* इत्यादि। पाकशास्त्र पर *नलपाक* नामक ग्रन्थ है।

कुछ समय पूर्व महर्षि भरद्वाज कृत *यन्त्रसर्वस्व* नामक ग्रन्थ की प्राप्ति हुई है, जिसमें विमानविद्या का विवरण है। रसायनशास्त्र का प्राचीन भारत में बहुत प्रचार था। नागार्जुन इस विद्या के बड़े आचार्य थे। *रसार्णव* तथा *रसरत्नसमुच्चय* नामक ग्रन्थों में खनिज-धातुओं से विविध रसों के निर्माण की विधियाँ वर्णित हैं। बौद्धों ने इस क्षेत्र में बहुत काम किया।

वनस्पति-विज्ञान का अध्ययन भी आयुर्वेद का क्षेत्र है। अनेक वृक्षों तथा पौधों के गुण-धर्म, उन्हें पहचानने के साधन आदि का विचार करने के लिए कई ग्रन्थ लिखे गए, जैसे— *वृक्षायुर्वेद, उपवनविनोद* आदि। संगीतशास्त्र में भी प्राचीन भारत ने बहुत प्रगति की। नाट्यशास्त्र के अतिरिक्त *संगीतमकरन्द, संगीतरत्नाकर* (शार्ङ्गदेव-रचित), *सङ्गीतदर्पण* (दामोदर कृत) तथा *रागविबोध* इस विषय के प्रमुख ग्रन्थ हैं। नृत्यशास्त्र

Reprint 2025-26

पर भी *अभिनयदर्पण* (नन्दिकेश्वर कृत), *श्रीहस्तमुक्तावली* आदि ग्रन्थ हैं। चित्र-कला पर पृथक् प्रकरण *विष्णुधर्मोत्तर पुराण* में मिलता है।

कामशास्त्र के क्षेत्र में वात्स्यायन का *कामसूत्र* सुविख्यात ग्रन्थ है। इसका काल तीसरी शताब्दी ई. माना जाता है। इसमें गद्य-पद्य का मिश्रण है और सात खण्ड हैं, जिनमें प्रेम, विवाह, नायिका, वेश्या, प्रणय की सफलता के उपाय आदि अनेक विषयों का वर्णन है। तेरहवीं शताब्दी में इस पर यशोधर ने जयमङ्गला व्याख्या लिखी। इस शास्त्र के अन्य ग्रन्थ हैं— *रतिमञ्जरी, रतिरहस्य* तथा कल्याणमल्ल कृत *अनङ्गरङ्ग* इत्यादि।

इस विवेचन से सिद्ध होता है कि विभिन्न शास्त्रों के क्षेत्र में भारतीय विद्वान् सभी युगों में योगदान करते रहे। उन्होंने ज्ञान और व्यवहार का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं छोड़ा। साधारण व्यवहार की बात हो या गंभीर दार्शनिक चिंतन की, सभी को सूक्ष्म नियमों के द्वारा प्रतिपादित किया गया। इससे संस्कृत साहित्य की व्यापकता सिद्ध होती है।

ध्यातव्य बिन्दु

- वैदिक काल से ही शास्त्रीय साहित्य का विकास हुआ।
- वैदिक युग में शिक्षा, व्याकरण तथा निरुक्त अलग-अलग शास्त्र थे, किन्तु लौकिक संस्कृत युग में तीनों व्याकरण में ही समाविष्ट हो गए।
- वैदिक यज्ञों में वेदिका तथा यज्ञशाला के निर्माण के क्रम में गणित तथा भवन-विज्ञान (वास्तुशास्त्र) का जन्म हुआ।
- *अथर्ववेद* में प्राप्त चिकित्सा से सम्बद्ध संकेतों से आयुर्वेद का विकास हुआ।
- वैदिक साहित्य के समाज तथा धर्म संबंधी विचारों का संकलन करके धर्मशास्त्र और *ऋग्वेद* तथा *अथर्ववेद* के दार्शनिक चिन्तनों से दर्शनशास्त्र का विकास हुआ। दर्शनशास्त्र मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक— इन छ: रूपों में विकसित हुआ।
- वेदों से ही कामशास्त्र, काव्यशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि भी विकसित हुए।
- वैदिक शब्दों के कोश को *निघण्टु* कहा गया। बाद में चल कर अमर सिंह का अमरकोश, हलायुध की *अभिधानरत्नमाला*, यादवप्रकाश की *वैजयन्ती* आदि प्रसिद्ध कोशग्रन्थ हुए।
- पिंगलाचार्य के द्वारा लिखित छन्द:सूत्र छन्दशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसमें

Reprint 2025-26

वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग है। *सुवृत्ततिलक*, *वृत्तरत्नाकर* तथा *छन्दोमञ्जरी* आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

- सर्वप्रथम उपलब्ध व्याकरण ग्रन्थ पाणिनि की *अष्टाध्यायी* ही है। पाणिनि, उनके सूत्रों के वार्तिककार कात्यायन और महाभाष्यकार पतञ्जलि— इन तीनों आचार्यों को व्याकरणशास्त्र में त्रिमुनि कहा जाता है।
- पाणिनि के अतिरिक्त कातन्त्र, चान्द्र, शाकटायन आदि व्याकरण सम्प्रदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं।
- धर्मशास्त्रों में वर्णाश्रम व्यवस्था, राजा के कर्तव्य, विवाद का निर्णय आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। *मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पराशरस्मृति, नारदस्मृति, विष्णुस्मृति* आदि प्रमुख स्मृतियाँ हैं।
- राजनीति विषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* है। व्यावहारिक नीति पर संस्कृत में अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं। *कामन्दकीयनीतिसार, नीतिवाक्यामृत, चाणक्यनीतिदर्पण, युक्तिकल्पतरु, नीतिरत्नाकर* और *शुक्रनीति* इस शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ हैं।
- धनुर्वेद, गजशास्त्र, अश्वशास्त्र, शिल्पशास्त्र, विमानविद्या, रसायनशास्त्र, वनस्पति-विज्ञान, संगीतशास्त्र आदि व्यावहारिक शास्त्र भी मिलते हैं।
- चिकित्साशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ *चरकसंहिता* है। इसके अतिरिक्त *सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय* और *अष्टांगसंग्रह* आदि इस शास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रन्थ हैं।
- ज्योतिष और गणित शास्त्र का *आर्यभटीय* नामक ग्रन्थ आर्यभट्ट द्वारा रचित है। इसके बाद इस शास्त्र में वराहमिहिर ने *बृहत्संहिता, बृहज्जातक* और *लघुजातक* नामक ग्रन्थ लिखे।
- दार्शनिक धारा दो भागों में विभक्त हो गई— आस्तिक तथा नास्तिक। वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाने वाली धारा आस्तिक और विरोध करने वाली धारा नास्तिक कही गई।
- काव्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र एवं साहित्यशास्त्र भी कहते हैं। इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ भरतमुनि का *नाट्यशास्त्र* है। इसके बाद भामह, वामन, मम्मट आदि काव्यशास्त्री प्रसिद्ध हैं। जगन्नाथ का *रसगंगाधर* एक प्रकार से प्रौढ़ साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

Reprint 2025-26

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. शास्त्रीय साहित्य का विकास वस्तुत: किस युग से आरंभ होता है?

प्र. 2. वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण तथा अर्थों को समझने के लिए किन शास्त्रों की आवश्यकता होती है?

प्र. 3. वैदिक यज्ञों में वास्तुकला की आवश्यकता क्यों पड़ी?

प्र. 4. आयुर्वेद का आधार कौन-सा ग्रन्थ है?

प्र. 5. दर्शनशास्त्र किन-किन रूपों में विकसित हुआ?

प्र. 6. काव्यशास्त्र के आविर्भाव का कारण बताइए।

प्र. 7. राजनीति का विवेचन पहले किस रूप में होता था?

प्र. 8. *अर्थशास्त्र* किस शास्त्र से विकसित हुआ?

प्र. 9. *निघण्टु* किसे कहते हैं? इसमें किसका संकलन किया गया है?

प्र.10. *अमरकोश* की रचना किस शताब्दी में हुई थी?

प्र.11. लेखक और ग्रन्थों को सही-सही मिलाइए—

क	ख
हलायुध	वैजयन्ती
यादवप्रकश	विश्वप्रकाश
महेश्वर	अभिधानरत्नमाला
हेमचन्द्र	अभिधानचिन्तामणि

प्र.12. *शब्दकल्पद्रुम* के लेखक कौन थे?

प्र.13. व्याकरणशास्त्र संबंधी सर्वप्रथम ग्रन्थ कौन-सा है और इसके रचयिता कौन है?

प्र.14. *अष्टाध्यायी* में कितने अध्याय और सूत्र हैं?

प्र.15. पाणिनि का समय क्या माना गया है?

प्र.16. कात्यायन कौन थे और व्याकरण में उनका क्या योगदान है?

प्र.17. *महाभाष्य* का विषय क्या है?

प्र.18. *सिद्धान्तकौमुदी* की रचना किसने की?

प्र.19. पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश के लिए कौन-सा सरल ग्रन्थ लिखा गया है?

प्र.20. व्याकरण में 'त्रिमुनि' के नाम से कौन प्रसिद्ध हैं?

प्र.21. पाणिनीय व्याकरण पर लिखित कुछ दार्शनिक ग्रन्थों के नाम लिखिए।

प्र.22. पाँच वैयाकरणों के नाम लिखिए।

Reprint 2025-26

प्र. 23. धर्मशास्त्र के अंतर्गत किन विषयों का विचार प्राप्त होता है?
प्र. 24. स्मृतिग्रन्थों में सर्वाधिक महत्त्व किसका है? उसकी रचना किसने की?
प्र. 25. स्मृतियों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण क्यों है?
प्र. 26. सभी मानवों का पिता किसे कहा गया है?
प्र. 27. *मनुस्मृति* में किसका विवेचन किया गया है?
प्र. 28. तीन स्मृतिग्रन्थों के नाम लिखिए।
प्र. 29. *मनुस्मृति* और *याज्ञवल्क्यस्मृति* के अध्यायों की संख्या बताइए।
प्र. 30. *वीरचिन्तामणि* में किस विषय पर विचार किया गया है तथा उसके लेखक कौन हैं?
प्र. 31. गजशास्त्र और अश्वशास्त्र के एक-एक ग्रन्थ का नाम दीजिए।
प्र. 32. गणित के क्षेत्र में किन-किन ग्रन्थकारों का महान् योगदान रहा है?
प्र. 33. फलित ज्योतिष पर वराहमिहिर के कौन-कौन से ग्रन्थ हैं?
प्र. 34. नास्तिक दर्शन के कितने रूप मिलते हैं? वे क्या-क्या हैं?
प्र. 35. चार्वाक दर्शन का संस्थापक कौन है?
प्र. 36. बौद्ध धर्म किसके द्वारा आरम्भ हुआ?
प्र. 37. किन-किन देशों में बौद्ध धर्म का विकास हुआ?
प्र. 38. बौद्ध दर्शन की शाखाओं के नाम लिखिए।
प्र. 39. आस्तिक दर्शन के छ: रूपों के नाम लिखिए।
प्र. 40. न्यायदर्शन का प्रवर्त्तक कौन है?
प्र. 41. *तात्पर्यटीका* किसकी रचना है?
प्र. 42. जयन्तभट्ट किस प्रसिद्ध ग्रन्थ का लेखक है?
प्र. 43. अलंकार शास्त्र के अन्य नाम बताइए।
प्र. 44. अर्थशास्त्र में किन-किन विषयों का वर्णन है? पचास शब्दों में लिखिए।
प्र. 45. नीतिशास्त्र के पाँच प्रमुख ग्रन्थों के नाम लिखिए।
प्र. 46. रिक्त स्थानों को भरिए—

(क) राजनीति विषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य का.............................है।

(ख) कौटिल्य का दूसरा नाम .... है।

(ग) भरतमुनि .... शास्त्र के रचयिता हैं।

(घ) तत्त्वचिन्तामणि .... की रचना है।

(ड) मीमांसा का आरम्भ .... के मीमांसा सूत्रों से होता है।

(च) .... और .... ने मीमांसा में दो पृथक् संप्रदाय चलाए।

(छ) .... को उपवेद माना गया है।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished

प्र. 47. निम्नलिखित दर्शनों का प्रवर्त्तक कौन है?

(क) वेदान्तदर्शन ....

(ख) न्यायदर्शन ....

(ग) वैशेषिकदर्शन ....

(घ) सांख्यदर्शन ....

(ङ) योगदर्शन ....

(च) मीमांसादर्शन ....

प्र. 48. कोष्ठक से लेखकों को चुनिए—

काव्यालंकार ....

काव्यादर्श ....

काव्यालंकारसूत्र ....

ध्वन्यालोक . ...

वक्रोक्तिजीवित ....

काव्यमीमांसा ....

(कुन्तक, राजशेखर, भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन, वामन)

प्र. 49. लेखक और शास्त्रों को ठीक-ठीक मिलाइए—

लेखक	**शास्त्र**
वाग्भट	कामसूत्र
नागार्जुन	चरकसंहिता
चरक	अष्टांगसंग्रह
वात्स्यायन	योगसार
भास्कराचार्य	पञ्चसिद्धान्तिका
वराहमिहिर	लीलावती

प्र. 50. ठीक-ठीक जोड़िए—

वनस्पतिविज्ञान	रागविबोध
शिल्पशास्त्र	नवरत्नपरीक्षा
मूर्तिकला	नलपाक
रत्नविज्ञान	वास्तुमण्डन
पाकशास्त्र	मानसार
रसरत्नसमुच्चय	यन्त्रसर्वस्व
विमानविद्या	रसायनशास्त्र
संगीतशास्त्र	उपवनविनोद

Reprint 2025-26

not to be republished © NCERT

प्र.51. ग्रन्थकार, ग्रन्थ और काल ठीक-ठीक मिलाइए—

ग्रन्थकार	**ग्रन्थ**	**काल**
मम्मट	रसगंगाधर	चौदहवीं शताब्दी
विश्वनाथ	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी
जगन्नाथ	साहित्यदर्पण	सोलहवीं शताब्दी

प्र.52. ठीक-ठीक जोड़िए—

बादरायण	वेदान्तसार
वल्लभाचार्य	श्रीभाष्य
रामानुज	द्वैतसिद्धान्त
मध्वाचार्य	शुद्धाद्वैतसिद्धान्त
सदानन्द	ब्रह्मसूत्र

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट — I

लेखकानुक्रमणिका

अंगिरा
अथर्वा
अन्नम्भट्ट
अमरु कवि
अम्बिकादत्त व्यास
अमीरचन्द्र शास्त्री
अशोक पुरनाटुकर
अश्वघोष
आनन्दवर्द्धन
आर्यभट्ट
आर्यशूर
इच्छाराम द्विवेदी
ईश्वरकृष्ण
ईश्वरदत्त
उदयनाचार्य
उद्योतकर
उमापति द्विवेदी
उमास्वाति (उमास्वामी)
ओगेटी परीक्षित शर्मा
कणाद
कपिल
कमला पाण्डेय
कर्णपूर (कविकर्णपूर)
कल्हण
कात्यायन
कालिदास
काशीनाथ द्विवेदी
कुन्तक
कुमारिल
कुभीदास
कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास)
कृष्णप्रसाद शर्मा
कृष्णमिश्र
के.के.आर. नायर
केदारभट्ट
केशवभट्ट
केशवमिश्र
केशवचन्द्र दाश
कौटिल्य
कौण्डभट्ट
क्षमाराव
क्षेमेन्द्र
गङ्गादास
गङ्गेश उपाध्याय
गुणभद्र
गुणाढ्य
गेटे
गोवर्धनाचार्य
गौतम
चण्डेश्वर
चिन्तामणिभट्ट
जगन्नाथ पण्डितराज

© NCERT not to be republished

जगन्नाथ पाठक
जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि'
जम्बूद कवि
जम्बूदत्त
जयदेव
जयन्तभट्ट
जयादित्य
जानकी वल्लभ शास्त्री
जी. बी. पलसुले
जीवगोस्वामी
जैमिनि
जोनराज
टी. गणपति शास्त्री
तारानाथ तर्कवाचस्पति
तिरुमलाम्बास
त्रिविक्रमभट्ट
दण्डी
दयानिधि मिश्र
दामोदर
दामोदरभट्ट
दामोदरमिश्र
दीपक भट्टाचार्य
देवसूरि
द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री
धनपाल
धनेश्वर सूरि
धोयी कवि
नन्दिकेश्वरर
नयचन्द्र सूरि
नागार्जुन
नागेशभट्ट
नारायण पण्डित
नीलकण्ठ दीक्षित
पतञ्जलि
पद्म शास्त्री
पाणिनि
पार्जिटर
पिङ्गलाचार्य
पुष्पदन्त
प्रशस्यमित्र शास्त्री
प्रभाकर
प्रभुनाथ द्विवेदी
बाणभट्ट प्रशस्तपाद
प्रभुनाथ शास्त्री
बटुकनाथ शास्त्री
बटुकनाथ शर्मा
बच्चलाल अवस्थी
बनमाली बिश्वाल
बिल्हण बादरायण
बिहारी
बुद्धभट्ट
ब्रह्मगुप्त
ब्रह्मानन्द शुक्ल
भट्टनारायण
भट्ट मथुरानाथ शास्त्री
भट्टि
भट्टोजि दीक्षित
भरतमुनि
भर्तृहरि
भवभूति
भामह
भारद्वाज

Reprint 2025-26

भारवि
भावमिश्र
भास
भास्कराचार्य
भास्कराचार्य त्रिपाठी
भोज
मख
मण्डन मिश्र
मथुरा प्रसाद दीक्षित
मधुसूदन
मध्वाचार्य
मम्मट
मयूर (मयूरभट्ट)
महालिङ्ग शास्त्री
महेन्द्र विक्रम
महेश्वर
माघ
माधवाचार्य
मुरारि
मेधाव्रत
मेरुतुङ्ग
यशपाल
यशोधर
याज्ञवक्ल्य
यादवप्रकाश
यास्क
रत्नाकर
रमाकान्तशुक्ल
राजगोपाल आयङ्गर
राजशेखर
राजेन्द्र मिश्र
राधाकान्त देव
राधावल्लभ त्रिपाठी
रामकरण शर्मा
रामकुबेर मालवीय
रामचन्द्र
रामजी उपाध्याय
रामभद्र दीक्षित
रामभद्राचार्य
रामशरण त्रिपाठी
रामानुज
रामावतार शर्मा
रूपगोस्वामी
रेवाप्रसाद द्विवेदी
लक्ष्मणभट्ट
लगधाचार्य
वत्सराज
वररुचि
वराहमिहिर
वल्लभाचार्य
वल्लालसेन
वसन्त त्र्यम्बक शेबडे
वाक्पतिराज
वाग्भट
वाचस्पतिमिश्र
वात्याहियन
वामन
वामनभट्टबाण
वादिराजसूरि
वाल्मीकि
वासुदेव द्विवेदी
विज्ञानभिक्षु

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

विद्यापति
विन्येपतश्वकरी प्रसाद
विशाखदत्त
विश्वनाथ
विश्वनाथ केशव छत्रे
विष्णुशर्मा
वीरनन्दी
वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
वेङ्कटराज
वेङ्कटनाथ
वेङ्कटाचल
वेङ्कटाध्वरि
वेदव्यास (व्यास)
वेदकुमारी घई
वेदान्त देशिक
शङ्कराचार्य
शबरस्वामी
शाकटायन
शाकल्य
शॉपेनहावर
शार्ङ्गदेव
शार्ङ्गधर
शिवगोविन्द त्रिपाठी
शिवाजी उपाध्याय
शिवदास
शिवस्वामी
शुक
शूद्रक
शेषश्रीकृष्ण
शौनक
श्यामिलक
श्रीकृष्ण गोस्वामी
श्रीधर
श्रीधर भास्कर वर्णेकर
श्री भाष्य विजय सारथि
श्री नारायण रथ
श्री निवास रथ
श्रीपाद हसूरकर
श्रीहर्ष
सङ्कर्षण
सत्यव्रत शास्त्री
सदानन्द
साधुशरण मिश्र
सिद्धार्थ
सुपद्म
सुबन्धु
सोड्ढल
सोमदेव
सोमदेव सूरि
सोमप्रभसूरि
सोमेश्वर
स्फोटायन
हरिभद्र
हरिचन्द्र
हरिदत्त शर्मा
हरिदास सिद्धान्त वागीश
हरिहरप्रसाद द्विवेदी
हर्ष
हर्षदेव माधव
हलायुध
हाल
हेमचन्द्र

Reprint 2025-26
© NCERT not to be republished

परिशिष्ट — II

ग्रन्थानुक्रमणिका

अग्निशिखा
अथर्ववेद
अथर्वांगिरसवेद (अथर्ववेद)
अनङ्गरङ्ग
अनर्घराघव
अनुभूति
अभिज्ञानशाकुन्तल
अभिधर्मकोष
अभिधानचिन्तामणि
अभिधानरत्नमाला
अभिनयदर्पण
अमरकोष
अमरुशतक
अर्थशास्त्र
अवदानशतक
अवन्तिसुन्दरीकथा
अविमारक
अश्ववेद्यक
अश्वायुर्वेद
अष्टाङ्गसंग्रह
अष्टाङ्गहृदयसंहिता
अष्टाध्यायी
आनन्दवृन्दावनचम्पू
आपस्तम्ब-धर्मसूत्र
आपस्तम्ब-श्रौतसूत्र
आयुर्वेद
आर्चतिष
आर्यभटीय
आर्यासप्तशती
आर्षानुक्रमणी
आर्षेयब्राह्मण
आश्वलायन-गृह्यसूत्र
आश्वलायन-श्रौतसूत्र
ईशोपनिषद्
उत्कलिका
उत्तरपुराण
उत्तररामचरित
उदयसुन्दरीकथा
उपमितिभवप्रपञ्चकथा
उपवनविनोद
उभयाभिसारिका (भाण)
उरुभंग
ऋक्प्रातिशाख्य
ऋक्सर्वानुक्रमणी

© NCERT not to be republished

ऋग्वेद
ऋतुसंहार
ऐतरेय आरण्यक
ऐतरेय उपनिषद्
ऐतरेय ब्राह्मण
कोदण्डमण्डन
कठोपनिषद्
कथामुक्तावली
कथासरित्सागर
कप्फणाभ्युदय
कर्णभार
कर्पूरचरित (भाण)
कर्पूरमञ्जरी
कलाविलास
काठक संहिता
कात्यायन-श्रौतसूत्र
कादम्बरी
कापिष्ठल संहिता
कामन्दकीयनीतिसार
कामसूत्र
कालिका उपपुराण
कालोऽस्मि
काव्यप्रकाश
काव्यमीमांसा
काव्यादर्श
काव्यालङ्कार
काव्यालङ्कारसूत्र
काशिकावृत्ति
किरातार्जुनीय (व्यायोग)
कीर्तिकौमुदी
कुट्टनीमत
कुमारसंभव
कुलार्णवतन्त्र
कृष्णयजुर्वेद
केनोपनिषद्
कोदण्डिमण्डन
कौथुमशाखा
कौषीतकि आरण्यक
कौषीतकि उपनिषद्
कौषीतकि ब्राह्मण
खण्डनखण्डखाद्य
गङ्गालहरी
गाहासतसई (गाथासप्तशती)
गीतकन्दलिका
गीतमन्दाकिनी
गीतगोविन्द
गीता
गोपथब्राह्मण
गोपालकचम्पू
गोल
गउडवहो
गौतमधर्मसूत्र
ग्रहगणित
घटकर्पर काव्य

Reprint 2025-26
© NCERT not to be republished

चण्डीशतक
चतुर्वर्गसंग्रह
चन्द्रप्रभचरित
चरकसंहिता
चाणक्यनीतिदर्पण
चारुदत्त
चैतन्यचन्द्रोदय
चौरपञ्चाशिका
छन्दोऽनुक्रमणी
छन्दोमञ्जरी
छन्द:सूत्र
छान्दोग्योपनिषद्
छान्दोग्यब्राह्मण
छान्दोग्यसामवेद
जयमङ्गलव्याख्या
जसहरचरिउ
जातकमाला
जानकीहरण
जीवन्धरचम्पू
जैमिनीय-उपनिषद्
जैमिनीय-ब्राह्मण
जैमिनीय-श्रौतसूत्र
जैमिनीय-सामवेद
ज्योतिर्विदाभरण
तत्त्वकौमुदीटीका
तत्त्वचिन्तामणि
तत्वार्थाधिगमसूत्र
तदेव गगनं सैव धरा
तन्त्रवार्तिक
तन्त्रराज
तर्कभाषा
तर्कसंग्रह
ताण्ड्य-ब्राह्मण
तात्पर्यटीका
तात्पर्यटीकापरिशुद्धि
तिलकमञ्जरी
तैत्तिरीयारण्यक
तैत्तिरीय-उपनिषद्
तैत्तिरीय-ब्राह्मण
तैत्तिरीय-संहिता (कृष्ण यजुर्वेद)
त्रिपुरदाह (डिम)
दमयन्तीकथा (नलचम्पू)
दशकुमारचरित
दशावतारचरित
दर्पदलन
दिव्यावदान
दूतघटोत्कच
दूतवाक्य
दैवतब्राह्मण
धनुर्वेद
धर्मशर्माभ्युदय
धूर्त्तविटसंवाद
ध्वन्यालोक
नलचम्पू (दमयन्तीकथा)

Reprint 2025-26

नलपाक	*पञ्चरात्र*

नलपाक
नवरत्नपरीक्षा
नवसाहसांकदेवचरित
नागानन्द
नाट्यशास्त्र
नारद उपपुराण
नारदस्मृति
निघण्टु
निरुक्त
निर्झरिणी
निस्यन्दिनी
निष्कान्तित: सर्वे
नीतिप्रदीप
नीतिरत्नाकर
नीतिवाक्यामृत
नीतिशतक
नीतिसार
नीलकण्ठविजयचम्पू
नीलमतपुराण
नृसिंह उपपुराण
नृसिंहचम्पू
नेमिनिर्माणकाव्य
नैषधीयचरित
न्यायमञ्जरी
न्यायवार्तिक
न्यायसूत्र
पञ्चतन्त्र
पञ्चरात्र
पञ्चसिद्धान्तिका
पतञ्जलिचरित
पद्मप्राभृतक
पदार्थधर्मसंग्रह
परशुराम कल्पसूत्र
पराशर-उपपुराण
पर्यायकोश
पवनदूत
पादताडितक
पारिजातहरणचम्पू
पुरन्ध्री पञ्चकम्
पुरुष-परीक्षा
पृथ्वीराज-विजय
प्रक्रिया-कौमुदी
प्रतिज्ञायौगन्धरायण
प्रतिमानाटक
प्रपञ्चसार
प्रबन्धकोश
प्रबन्धचिन्तामणि
प्रबोधचन्द्रोदय
प्रश्नोपनिषद्
प्रासादमण्डन
प्रियदर्शिका
बालचरित
बालभारत
बालरामायण

बीजगणित
बुद्धचरित
बृहत्कथा
बृहत्कथामञ्जरी
बृहत्कथाश्लोकसंग्रह
बृहतीटीका
बृहज्जातक
बृहदारण्यक
बृहदारण्यकोपनिषद्
बृहद्देवता
बौधायनधर्मसूत्र
बौधायनश्रौतसूत्र
ब्रह्मसूत्र
ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त
भगवद्गीता
भजगोविन्दम्
भट्टिकाव्य (रावणवध)
भागवतपुराण
भाति मे भारतम्
भामिनीविलास
भार्गवराघवीयम्
भारतचम्पू
भारतमञ्जरी
भारद्वाज-श्रौतसूत्र
भावप्रकाश
भाषापरिच्छेद
भोजप्रबन्ध
मत्तविलासप्रहसन
मदालसाचम्पू
मध्यमव्यायोग
मनुष्यालयचन्द्रिका
मनुस्मृति
मयमत
महानिर्वाणतन्त्र
महाभारत
महावीरचरित
माण्डूक्योपनिषद्
मातङ्गलीला
माध्यमिककारिका
मानवश्रौतसूत्र
मानसार
मालतीमाधव
मालविकाग्निमित्र
मीमांसासूत्र
मुण्डकोपनिषद्
मुद्राराक्षस
मृच्छकटिक
मेघदूत
मैत्रायणी—उपनिषद् (मैत्री)
मैत्रायणीय-यजुर्वेद
मैत्रायणीयारण्यक
मैत्रायणीसंहिता
मोहमुद्गर
यजुर्वेद

Reprint 2025-26

यन्त्रसर्वस्व
यशस्तिलकचम्पू
याजुष-ज्यौतिष
याज्ञवल्क्य-स्मृति
यादवाभ्युदय
युक्तिकल्पतरु
योगवासिष्ठ
योगसार
योगसूत्र
रक्षत गंगाम्
रघुवंश
रतिमञ्जरी
रतिरहस्य
रत्नपरीक्षा
रत्नावली
रसगङ्गाधर
रसरत्नसमुच्चय
रसार्णव
रागविबोध
रागिणी
राजतरङ्गिणी
राजनीतिसमुच्चय
रामायण
रामायणचम्पू
रामायणमञ्जरी
रावणवध
रूक्मिणीहरण
लङ्कावतारसूत्र
लघुजातक
लघुसिद्धान्तकौमुदी
ललितविस्तर
लसल्लतिका
लीलावती
वंशब्राह्मण
वक्रोक्तिजीवित
वरदाम्बिकापरिणय-चम्पू
वसिष्ठधर्मसूत्र
वाक्यपदीय
वाचस्पत्य
वाजसनेयिसंहिता
वाराहश्रौतसूत्र
वासवदत्ता
वास्तुमण्डन
विक्रमाङ्कदेवचरित
विक्रमोर्वशीय
विचित्रपरिषद्यात्रा
विद्धशालभञ्जिका
विद्यामाधवीय
विश्वगुणादर्शचम्पू
विश्वप्रकाश
विष्णुधर्मसूत्र
विष्णुधर्मोत्तरपुराण
विष्णुस्मृति
वीरचिन्तामणि

Reprint 2025-26

वृक्षायुर्वेद
वृत्तरत्नाकर
वृत्तसंहिता
वेणीसंहार
वेतालपञ्चविंशतिका
वेदाङ्गज्योतिष
वेदान्तसार
वैजयन्तीकोष
वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा
वैराग्यशतक
वैशेषिकसूत्र
व्यक्तिविवेक
शतपथब्राह्मण
शत्रुञ्जय
शब्दकल्पद्रुम
शाङ्करभाष्य
शाकलशाखा
शाङ्खायन-श्रौतसूत्र
शाम्बु-उपपुराण
शारदातिलक
शारिपुत्रप्रकरण
शार्ङ्गधरसंहिता
शिवपुराण
शिवमहिम्नस्तोत्र
शिवलीलार्णव
शिशुपालवध
शुक्रनीति
शुकसप्तति
शुक्लयजुर्वेद
शृंगारतिलक
शृंगारशतक
श्रीकण्ठचरित
श्रीभाष्य
श्रीहस्तमुक्तावली
श्लोकवार्तिक
श्वेताश्वतर उपनिषद्
षड्दर्शनसमुच्चय
षड्विंशब्राह्मण
सत्तसई
सद्धर्मपुण्डरीक
समयमातृका
समराङ्गणसूत्रधार
समुद्रमन्थन
सर्वदर्शनसंग्रह
सर्वानुक्रमणी (अथर्ववेद)
सङ्कल्पसूर्योदय
सङ्गीतदर्पण
सङ्गीतमकरन्द
सङ्गीतरत्नाकर
संहितोपनिषद्-ब्राह्मण
सांख्यकारिका
सांख्यप्रवचनभाष्य
सांख्यसूत्र
सामविधानब्राह्मण

Reprint 2025-26

सामवेद
साहित्यदर्पण
सिंहासनद्वात्रिंशत्पुत्तलिका
सिद्धान्तकौमुदी
सिद्धान्तशिरोमणि
सुधालहरी
सुवृत्ततिलक
सुश्रुतसंहिता
सूर्य-उपपुराण
सूर्यशतक
सेव्यसेवकोपदेश
सौन्ददरनन्द
सौन्दर्यलहरी
स्वप्नवासवदत्त
हंसदूत
हनुमन्नाटक
हम्मीरमहाकाव्य
हरविजय
हर्षचरित
हास्यचूडामणि (प्रहसन)
हितोपदेश
हिरण्यकेशी धर्मसूत्र

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट — III

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों की कालक्रमसारिणी

ऋग्वेद		2000 ई. पू. से 1300 ई. पू.
वैदिक साहित्य		
	संहिता	
	ब्राह्मण	2000 ई. पू. से 800 ई. पू.
	आरण्यक	
	उपनिषद्	
वेदाङ्ग साहित्य	(शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त, छन्द, ज्यौतिष)	800 ई. पू. से आरंभ
लगधाचार्य	वेदाङ्ग ज्योतिष	1400 ई. पू. से 800 ई. पू.
यास्क	निरुक्त	800 ई. पू.
पिंगलाचार्य	छन्द:सूत्र	800 ई. पू. से 700 ई. पू.
कपिल	सांख्यसूत्र	700 ई. पू.
जैमिनि	मीमांसासूत्र	600 ई. पू.
कणाद	वैशेषिकसूत्र	500 ई. पू.
चरक	चरकसंहिता	500 ई. पू. से 200 ई. पू.
सुश्रुत	सुश्रुतसंहिता	500 ई. पू.
पाणिनि	अष्टाध्यायी	500 ई. पू.
वाल्मीकि	रामायण	500 ई. पू.
व्यास	महाभारत	400 ई. पू.
आश्वलायन	आश्वलायनगृह्यसूत्र	400 ई. पू.
		ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों की कालक्रमसारिणी 137
कौटिल्य	(चाणक्य) अर्थशास्त्र	400 ई. पू.

© NCERT not to be republished

वादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई. पू.
व्यास	पुराण	300 ई. पू.
कात्यायन (वररुचि)	वार्तिक (अष्टाध्यायी पर)	300 ई. पू.
पतञ्जलि	महाभाष्य,	
	योगसूत्र	185 ई. पू.
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	100 ई. पू. से 300 ई. पू.
भास	प्रतिभा, अभिषेक बालचरित,	100 ई. पू. से 200 ई. के बीच
	पञ्चरात्र, मध्यमव्यायोग	
	कर्णभार,	
	उरुभंग, दूतवाक्य,	
	दूतघटोत्कच।	
	स्वप्नवासवदत्त,	
	प्रतिज्ञायौगन्धरायण,	
	आविमारक और चारुदत्त।	
मनु	मनुस्मुति	200 ई. पू. से 200 ई. के बीच
कालिदास	रघुवंश, कुमारसम्भव,	100 ई. पू.
	ऋतुसहार,	
	मेघदूत,	
	मालविकाग्निमित्र,	
	विक्रमोर्वशीय,	
	अभिज्ञानशाकुन्तल।	
अश्वघोष	बुद्धचरित,	प्रथम शताब्दी ई.
	सौन्दरनन्द,	
	शारिपुत्रप्रकरण	
गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथम शताब्दी ई.
उमास्वामी (उमास्वाति)	तत्वार्थाधिगमसूत्र	100 ई. के आस-पास
हाल (शालिवाहन)	गाहा सतसई (गाथा सप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
प्रशस्तपाद	पदार्थधर्मसंग्रह	द्वितीय शताब्दी ई.

Reprint 2025-26

वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीय शताब्दी ई.
शर्ववर्मा	कातन्त्र	द्वितीय शताब्दी ई.
शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीय शताब्दी ई.
	नारदस्मृति	दूसरी शताब्दी से पांचवी शताब्दी ई.
विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
अमरसिंह	अमरकोश	तीसरी शताब्दी ई. (पूर्वार्ध)
वात्स्यायन	कामसूत्र	तीसरी शताब्दी ई.
याज्ञवल्क्यस्मृति		तीसरी शताब्दी ई.
आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
शूद्रक	मृच्छकटिक	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी-शताब्दी ई.
चन्द्रगोस्वामी	चान्द्रव्याकरण	चौथी-पाँचवी शताब्दी ई.
आर्यभट्ट	आर्यभटीय	पाँचवीं शताब्दी ई. (उत्तरार्ध)
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	पाँचवी छठी शताब्दी ई.
कुमारदास	जानकीहरण	छठी शताब्दी ई.
दण्डी	दशकुमारचरित, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा	छठी शताब्दी ई.
उद्योतकर	न्यायवार्तिक	छठी शताब्दी ई.
भारवि	किरातार्जुनीय	छठी शताब्दी ई.
भर्तृहरि	वाक्यपदीय	छठी शताब्दी ई.
वराहमिहिर	पञ्चसिद्धान्तिका वृत्तसंहिता, बृहज्जातक, लघुजातक	550 ई. के आसपास
भट्टि	रावणवध या भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
भामह	काव्यालंकार	छठी शताब्दी ई.
माघ	शिशुपालवध	सातवीं शताब्दी ई.

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

शंकराचार्य	भजगोविन्दम्, सौन्दर्यलहरी, शांकरभाष्य	सातवीं शताब्दी
बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरित, चण्डीशतक	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध
मयूरभट्ट	सूर्यशतक	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध
सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध
भर्तृहरि	श्रृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	सातवीं शताब्दी ई.
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त	सातवीं शताब्दी ई.
महेन्द्रविक्रम	मत्तविलासप्रहसन	सातवीं शताब्दी ई.
कामन्दकि	कामन्दकीयनीतिसार	सातवीं शताब्दी ई.
प्रभाकर मिश्र	बृहतीटीका (शाबरभाष्य पर)	सातवीं शताब्दी ई.
हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्ध
भवभूति	महावीरचरित, मालती-माधव, उत्तररामचरित	सातवीं शताब्दी ई. के आसपास
अमरुकवि	अमरुशतक	सातवीं शताब्दी
वाक्पतिराज	गउडवहो	750 ई. के आसपास
भट्टनारायण	वेणीसंहार	सातवीं आठवीं शताब्दी ई.
दामोदरभट्ट	कुट्टनीमत	आठवीं शताब्दी ई.
हरिभद्र	षड्दर्शनसमुच्चय	आठवीं शताब्दी ई.
मुरारि	अनर्घराघव	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
वामन	काशिकावृत्ति, काव्यालंकारसूत्र	आठवीं-दसवीं शताब्दी ई.
पुष्पदन्त	शिवमहिम्न स्तोत्र	आठवीं-दसवीं शताब्दी ई.
बुद्धस्वामी	बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	आठवीं-नवीं शताब्दी ई.
वामन	काव्यालंकारसूत्र	आठवीं शताब्दी ई.
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
वाचस्पति मिश्र	तात्पर्यटीका	तत्त्वकौमुदीटीका (सांख्य)

© NCERT not to be republished

नवीं शताब्दी ई.	तत्त्वचिन्तामणि	
शाकटायन	(पाल्यकीर्ति) शाकटायन व्याकरण नवीं शताब्दी ई.	
दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवीं शताब्दी ई.
रत्नाकर	हरविजय	नवीं शताब्दी ई.
शिवस्वामी	कप्फणाभ्युदय	नवीं शताब्दी ई.
राजशेखर	काव्यमीमांसा, बालरामायण, बालभारत, कर्पूरमञ्जरी	नवीं शताब्दी ई.
	विद्धशालभञ्जिका	नवीं शताब्दी ई.
सिद्धार्थ	उपमितिभवप्रपञ्चकथा	नवीं शतब्दी ई.
श्यामिलक	पादताडितक	800-900 ई. के बीच
जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
सोमदेव सूरि	नीतिवाक्यामृत, यशस्तिलकचम्पू	दसवीं शताब्दी ई.
धनपाल	तिलक मञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
हरिचन्द्र	जीवन्धरचम्पू	दसवीं शताब्दी ई.
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्ध
हलायुध	अमिधानरत्नमाला	दसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
क्षेमेन्द्र	सुवृत्ततिलक, दशावतारचरित, कलाविलास, दर्पदलन, चतुर्वर्गसंग्रह, बृहत्कथा मञ्जरी, समयमात्रिका, औचित्यविचारचर्चा	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
यादवप्रकाश	वैजयन्ती	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
कृष्णमित्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
सोड्ढल	उदयसुन्दरीकथा	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी ई.
हेमचन्द्र	कुमारपालचरित,	1088 ई. से 1172 ई.

Reprint 2025-26

	अभिधानचिन्तामणि	
बिल्हण	विक्रमांकदेवचरित, चौरपञ्चाशिका	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
भोज	रामायणचम्पू, युक्तिकल्पतरु	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
पद्‌मगुप्त	नवसाहसांकचरित	1005 ई.
केशवमिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी ई.
अनुभूतिस्वरूप	सारस्वतप्रक्रिया	बारहवीं शताब्दी ई.
वत्सराज	किरातार्जुनीय, रूक्मिणीहरण, त्रिपुरदाह, समुद्रमंथन, कर्पूरचरित, हास्यचूडामणि	बारहवीं शताब्दी ई.
भास्कराचार्य	सिद्धान्तशिरोमणि, लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित, गोल	बारहवीं शताब्दी ई.
मम्मट	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी ई.
जल्हण	सोमपालचरित	बारहवीं शताब्दी ई.
महेश्वर	विश्वप्रकाश	बारहवीं शताब्दी ई.
अज्ञात	पृथ्वीराजविजय	1192 ई.
कल्हण	राजतरंगिणी	1148 ई. से 1151 ई. तक
मड	श्रीकण्ठचरित	बारहवीं शताब्दी ई.
श्रीहर्ष	नैषधीयचरित	बारहवीं शताब्दी ई.
गोवर्धनाचार्य	आर्यासप्तशती	बारहवीं शताब्दी ई.
जयदेव	गीतगोविन्द	बारहवीं शताब्दी ई.
विज्ञानभिक्षु	सांख्यप्रवचनभाष्य	तेरहवीं शताब्दी ई.
गंगेश उपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	तेरहवीं शताब्दी ई.
मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्य	तेरहवीं शताब्दी ई.
यशोधर	जयमंगलव्याख्या (कामसूत्र पर)	तेरहवीं शताब्दी ई.
यशपाल	मोहमुद्‌गर	तेरहवीं शताब्दी ई.
शार्ङ्गधर	शार्ङ्गधर संहिता	तेरहवीं शताब्दी ई.
सोमेश्वर	कीर्तिकौमुदी	तेरहवीं शताब्दी ई.

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

गंगादास	छन्दोमंजरी	तेरहवीं शताब्दी ई. से पन्द्रहवीं शताब्दी
राजशेखर	प्रबन्धकोश	1350 ई.
विद्यापति	पुरुषपरीक्षा	चौदहवीं शताब्दी ई.
नारायण पंडित	हितोपदेश	चौदहवीं शताब्दी ई.
माधवाचार्य	सर्वदर्शनसंग्रह	चौदहवीं शताब्दी ई.
विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी ई.
मरूतुंग	प्रबन्धचिन्तामणि	चौदहवीं शताब्दी ई.
नयचन्द्रसूरि	हम्मीरमहाकाव्य	चौदहवीं शताब्दी ई.
वेदान्तदेशिक	संकल्पसूर्योदय	चौदहवीं शताब्दी ई.
सुपद्‌म	सौपद्मव्याकरण	चौदहवीं शताब्दी ई.
रामचन्द्र	प्रक्रियाकौमुदी	चौदहवीं शताब्दी ई.
जोनराज	राजतरगिंणी	1450 ई.
श्रीवर	जैनराजतरगिंणी	1485 ई.
अनन्तभट्ट	भारतचम्पू	पन्द्रहवीं शताब्दी ई.
केदारभट्ट	वृत्तरत्नाकर	पन्द्रहवीं शताब्दी ई.
वल्लभाचार्य	अणुभाष्य	1479 ई. - 1544 ई.
बल्लालसेन	भोजप्रबन्ध	सोलहवीं शताब्दी ई.
कविकर्णपूर	आनन्दवृन्दावनचम्पू	सोलहवीं शताब्दी ई.
शेषश्रीकृष्ण	पारिजातहरणचम्पू	सोलहवीं शताब्दी ई.
जीवगोस्वामी	गोपालचम्पू	सोलहवीं शताब्दी ई.
तिरूमलाम्बा	वरदाम्बिका-परिणयचम्पू	सोलहवीं शताब्दी ई.
शुक	राजतरगिंणी	1596 ई.
कर्णपूर	चैतन्यचन्द्रोदय	सोलहवीं शताब्दी ई.
भावमिश्र	भावप्रकाश	सोलहवीं शताब्दी ई.
भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्तकौमुदी	सोलहवीं शताब्दी ई.
अन्नंभट्ट	तर्कसंग्रह	सत्रहवीं शताब्दी ई.
विश्वनाथ	न्यायपञ्चानन, भाषा-परिच्छेद, न्यायसूत्रवृत्ति	सत्रहवीं शताब्दी ई.

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार	सत्रहवीं शताब्दी ई.
नागेशभट्ट	वैयाकरण- सिद्धान्तलघुमंजूषा	सत्रहवीं शताब्दी ई.
सदानन्द	वेदान्तसार	सत्रहवीं शताब्दी ई.
नीलकण्ठदीक्षित	नीलकण्ठविजय- चम्पू	सत्रहवीं शताब्दी ई.
जगन्नाथ	(पण्डितराज) रसगंगाधर, भामिनिविलास, गगांलहरी, सुधालहरी	सत्रहवीं शताब्दी ई.
वेंकटाध्वरि	विश्वगुणादर्शचम्पू	सत्रहवीं शताब्दी ई.
अम्बिकादत्त व्यास	शिवराजविजय	1858-1900 ई.
तारानाथतर्कवाचस्पति	वाचस्पत्य	1873-1884 ई.
राधाकान्तदेव-शब्दकल्पद्रुम		उन्नीसवीं शताब्दी ई.
क्षमाराव (पण्डिता)	कथामुक्तावली, विचित्रपरिषद् यात्रा	1890-1954 ई.

© NCERT not to be republished

परिशिष्ट — IV

संस्कृतपत्रिकाणाम् अनुक्रमणिका

1. *अजस्रा* (त्रैमासिकपत्रिका)
अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्
अलीगंज, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

2. *अभिव्यक्ति:*
भारत संस्कृत परिषद्,
संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुर,
सेक्टर-6, नवदेहली-22

3. *अभिसंस्कृतम्* (मासिकम्)
3/129, विष्णुपुरी,
कानपुर, उत्तरप्रदेश

4. *अमृतभाषा*
कालिदासपुरम्, शान्तिनगरम्,
पत्रालय:-हरिपुर,
मोतीगञ्ज, बालेश्वर

5. *अमृतवाणी*
अग्रवालविद्यापीठम्, हल्दीपदा,
बालेश्वर, ओड़िसा-756027

6. *अर्वाचीनसंस्कृतम्* (त्रैमासिकम्)
देववाणी परिषद्, आर-6,
वाणी विहार, नवदेहली-110059

7. *आन्वीक्षिकी*
उत्तराखण्ड संस्कृत
अकादमी हरिद्वार

8. *आरण्यकम्*
अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्
अलीगंज, लखनऊ
(उत्तरप्रदेश)

9. *आर्ष-ज्योति:* (मासिकपत्रिका)
श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय,
119, गौतमनगर, नवदेहली-89

10. *कामधेनु:* (पाक्षिकपत्रम्)
भारतविद्यापीठ,
पत्रालय-इरैलियर
त्रिचुरम्, केरल:-680501

11. *गाण्डीवम्* (साप्ताहिकम्)
इन्दरनिवास, ए.जी. मार्ग:,
मुम्बई, महाराष्ट्रम्-400004

12. *गीर्वाणसुधा* (मासिकी)
इन्दरनिवास, ए.जी. मार्ग:,
मुम्बई, महाराष्ट्रम्-400004

© NCERT not to be republished

13. *गुञ्जारव:*
कालेश्वरमन्दिर, घुमेरगली,
अहमदनगर, महाराष्ट्रम्

14. *गुरुकुल शोधभारती*
गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार,
उत्तराखण्ड

15. *गैर्वाणी* (मासिकी)
संस्कृतभवन, प्रचारिणी सभा,
चित्तूर, आन्ध्रप्रदेश-510700

16. *गोरखपुरचर्चा*
बक्शीपुर, गोरखपुर
उत्तरप्रदेश-273001

17. *चन्दमामा* (मासिकी)
डाल्टन एजेन्सी, वाडापलानी,
चेई, तमिलनाडु-600026

18. त्रिस्कन्धज्योतिष:
65, ब्रह्मानन्दननगर,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-210005

19. *दिव्यज्योति:* (मासिकपत्रिका)
आनन्दलाज, जाखू, शिमला,
हिमाचलप्रदेश

20. *दिशाभारती* (पाक्षिकी)
43, उत्तरांचल एन्क्लेवम,
कमालपुर, बुराड़ी, देहली-110084

21. *दूर्वा* (पाक्षिकपत्रम्)
कालिदास संस्कृत आकदमी,
उज्जैन, मध्यप्रदेश-461002

22. *नवप्रभातम्* (दैनिकम्)
शारदानगर, कानपुर
उत्तरप्रदेश-271005

23. *नैसर्गिकी*
राष्ट्रिय नैसर्गिक शिक्षानुसन्धान
संस्थानम्, 38, मानसनगरम्,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश-271005

24. *परिशीलनम्*
उत्तरप्रदेश संस्कृत सस्थानम्
'संस्कृतभवनम्'
नया हैदराबादम्
लखनऊ, उत्तरप्रदेश-226007

25. *पारिजातम्* (मासिकम्)
105/94, प्रेमनगर,
कर्णपुर (कानपुर),
उत्तरप्रदेश

26. *पावमानी*
गुरुकुल-प्रभात-आश्रम:, टीकरी,
भोलाझालाम्, मेरठम्, उत्तरप्रदेश:

27. *पूर्णत्रयी* (अर्धवार्षिकी)
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय
त्रिपुनीथरा, केरल:-682301

Reprint 2025-26

28. *प्रभातम्* (त्रैमासिकम्)
समन्वयकमुटीरम्,
ई-1052, राजाजीपुर
लखनऊ, उत्तरप्रदेश-226017

29. *प्रियवाक्*
संस्कृतभवनम्,
लोकनाथमार्ग,
पुरी, उड़ीसा

30. *ब्रजगन्धा* (त्रैमासिकपत्रिका)
रामाश्रय, कृष्णापुरी, मथुरा,
उत्तरप्रदेश-281001

31. *भारतमुद्रा* (मासिकी)
पूर्णाकर, त्रिचूर,
केरलः-680550

32. *भारती* (मासिकम्)
भारती-भवन, बी-14,
विजय नगर,
जयपुर, राजस्थान

33. *भारतोदयः* (मासिकपत्रिका)
गुरुकुमहाविद्यालय,
ज्वालापुर, हरिद्वार,
उत्तरप्रदेशः-249405

34. *भास्वती* (षाण्मासिकपत्रिका)
संस्कृतविभाग, काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तरप्रदेशः

35. *युगगतिः* (साप्तहिकपत्रिका)
बक्शीपुर,
गोरखपुर,
उत्तरप्रदेश-273001

36. *रसिकप्रिया*
84 राधापेठ, हाई रोड, मेलपुर
चेई-600004,

37. *रावणेश्वरकाननम्*
चिताभूमि चन्द्रदत्त दारा रोड,
पी.टी. विलासी, बैजनाथ, देवधर,
बिहार-814117

38. *लोकसंस्कृतम्* (पाक्षिकम्)
संस्कृतकार्यालय
श्री अरविन्द आश्रम,
पाण्डिचेरी, तमिलनाडु-605002

39. *वाक्* (पाक्षिकं समाचारपत्रम्)
11, नालापानीमार्ग, चघवसति,
उत्तरप्रदेश, देहरादूनम्-240001

40. *वाङ्मयम्*-(ऊर्धवार्षिक)
चौधरी महादेव प्रसाद
महाविद्यालय, इलाहाबाद,
उत्तरप्रदेश

41. *संस्कृत वाङ्यमी*
लखनऊ विश्वविद्यालयः,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

42. *विश्वभाषा* (त्रैमासिकपत्रिका)
विश्वसंस्कृतप्रतिष्ठान, रामनगरदुर्गम
वाराणसी, उत्तरप्रदेश:

43. *वेदविद्या*
राष्ट्रियवेदविद्या प्रतिष्ठान
उज्जैन (मध्यप्रदेश)

44. *विश्वसंस्कृतम्* (त्रैमासिकपत्रिका)
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम्,
साधु आश्रम,
होशियारपुरम्,
पंजाब:-151021

45. *वैदिक वाक्ज्योति*
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तरप्रदेश

46. *शारदा*
2, झेलमपत्रकारनगर,
पुणे, महाराष्ट्र

47. *शोधप्रभा* (वार्षिकी)
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय
संस्कृत विद्यापीठम्,
कटवारिया सरायम्,
नवदेहली-110016

48. *श्रीपण्डितम्* (त्रैमासिकम्)
मधुसूदनशास्त्रिभवन, भदौनी,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश:

49. *संगमनी* (त्रैमासिकम्)
संस्कृतसाहित्यपरिषद्,
दारागंज, प्रयाग, उत्तरप्रदेश:

50. *सम्भाषण-सन्देश:*
'अक्षरम्' 8 तम: क्रोस: फेज-2
गिरिनगरम्, बेलुरु
कर्नाटकम्-460085

51. *सन्देश:* (द्वैमासिकपत्रिका)
2/132, बलागंजम्,
कानपुरम्, उत्तरप्रदेश:

52. *संविद्* (पाक्षिकम्)
भारतीयविद्याभवन
के.एस.मुन्शीमार्ग, मुम्बई, महाराष्ट्रम्

53. *संस्कृतप्रचारम्* (मासिकम्)
105, प्राध्यापकनिवास:,
हिमाचलप्रदेशविश्वविद्यालय,
समरहिल, हिमाचलप्रदेश:

54. *संस्कृतप्रतिभा* (वार्षिका)
साहित्य आकदमी,
रवीन्द्रमार्ग:, नवदेहली-110001

55. *संस्कृतमञ्जरी*
दिल्ली संस्कृत अकादमी,
दिल्ली सर्वकार, प्लाट सं. 5,
झण्डेवाला, करोलबाग,
नवदेहली-110005

© NCERT not to be republished

56. *संस्कृतमन्दाकिनी*
लोकभाषा प्रचार समिति
पुरी, ओड़िसा

57. *संस्कृतविमर्श:*
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
पंखा रोड, जनकपुरी,
नवदेहली-110058

58. *संस्कृतसञ्जीवनम्*
मनोरमाभवन, मार्ग सं. 6 सी,
राजेन्द्र नगर, पटना,
बिहार-800016

59. *संस्कृतसम्मेलनम्*
(त्रैमासिकपत्रिका)
श्रीरामनिरंजनमुरारका संस्कृत
महाविद्यालय चौक,
पटना नगर, बिहार:

60. *संस्कृतसाकेतम्* (पाक्षिकम्)
साकेतकार्यालय,
अखिलभारतीय बवद्वत्समितिः,
अयोध्या, उत्तरप्रदेश:

61. *स्वरमंगला* (त्रैमासिकपत्रिका)
राजस्थान संस्कृत अकादमी,
वीरेश्वर भवन गणगौर बाजार,
जयपुर, राजस्थानम्

62. *संस्कृतसौरभम्*
विद्याभारती, प्रेमकुंजम्
विन्ध्यवासिनी-पथ, कदमकुआँ,
पटना, बिहार

63. *संस्कृतामृतम्* (सप्ताहिकम्)
हयातगंजम्, टाण्डा
अम्बेडकरनगर, उत्तरप्रदेश

64. *सर्वगन्धा* (मासिकापत्रिका)
माईजी मन्दिर, अशरफाबादम,
लक्ष्मणपुर, लखनुऊ,
उत्तरप्रदेश-226003

65. *सत्यानन्दम्* (मासिकी)
एड्डबहीमपुर, राजमार्ग, यादवपुर,
चित्तूर, आन्ध्रप्रदेश-510700

66. *सागरिका* (पाक्षिकपत्रम्)
सागरिका समिति, गौरीनगर
सागर, मध्यप्रदेश

67. *सारस्वतम्*
बाहरी बेगमपुर, पटना
बिहार-800009

68. *सुधर्मा* (दैनिकम्)
561, रामचन्द्-अग्रहार,
श्रीकानत पावर प्रेस,
मैसूर, कर्नाटक-570004

Reprint 2025-26

69. *सुरभारती*
सुरभारती सेवा संस्थान,
167/12, पंजाबी कालोनी,
मैनपुरी, उत्तरप्रदेश

70. *हरिप्रभा*
हरियाणा संस्कृत अकादमी
पंचकुला (हरियाणा)

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

परिशिष्ट — V

अनुशंसित पुस्तकों की सूची

संस्कृत

1. अग्रवाल, हंसराज — *संस्कृतसाहित्येतिहास:*
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
2. मिश्र, रामचन्द्र — *संस्कृतसाहित्येतिहास:*
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. शास्त्री, द्विजेन्द्रनाथ — *संस्कृतवाङ्मयविमर्श:*

हिन्दी

1. अग्रवाल, हंसराज — *संस्कृत साहित्य का इतिहास*
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1965
2. उपाध्याय, बलदेव
   1. *संस्कृत साहित्य का इतिहास*
   प्रथम भाग, दशम संस्करण, शारदा-मंदिर, वाराणसी
   2. *संस्कृत साहित्य का इतिहास*
   द्वितीय भाग, शारदा मन्दिर, वाराणसी, 1973
   3. *वैदिक साहित्य और संस्कृत*
   शारदा संस्थान, वाराणसी, 1973
3. कीथ, ए. बी. (अनुवादक- डी. मंगलदेव शास्त्री)
   1. *संस्कृत साहित्य का इतिहास*
   मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1967
4. गैरोला, वाचस्पति — *संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास*
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1978

© NCERT not to be republished

5. पाण्डेय, चन्द्रशेखर — *संस्कृत साहित्य की रूपरेखा*
साहित्य निकेतन, कानपुर, 1964

6. मैकडोनल, ए. ए.
अनुवादक- चारुचन्द्र शास्त्री — *संस्कृत साहित्य का इतिहास*
प्रथम भाग, वैदिक युग
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

7. व्यास, भोलाशंकर — संस्कृत- कविदर्शन
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1968

8. विण्टरनिट्ज
1. *भारतीय साहित्य का इतिहास*
प्रथम भाग, (वैदिक साहित्य)
मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

अनुवादक- डॉ. रामचन्द्र पाण्डेय
2. *भारतीय साहित्य का इतिहास*
द्वितीय भाग, (रामायण, महाभारत,
पुराण) मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

अनुवादक- डॉ. सुभद्र झा
3. *भारतीय साहित्य का इतिहास*
तृतीय खण्ड, प्रथम भाग,
मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली

9. सूर्यकान्त — *संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास*
ओरिएण्ट लॉगमेन, नई दिल्ली, 1972

English

1. Keith A.B., *Classical Sanskrit Literature*
2. Krishna Chaitanya, *History of Sanskrit Literature*
3. Krishnamacharya, M., *History of Classical Sanskrit Literature,* Motilal Banarsidas, Delhi
4. Macdonell, A.A., *A History of Sanskrit Literature,* Motilal Banarsidas, Delhi, 1962
5. Winternitz. M., *A History of Indian Literature*
Vol. III, pt. I. (Classical period)
Vol. III, pt. II. (Scientific Period)

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished